Peer Reviewed Journal for M.Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College

ISSN : 2454-4655 VOLUME - 5 No. : 7 Aug - 2019

International Journal of Social Science & Management Studies

Refereed & Review Journal

Indexing & Impact Factor 3.9

International Journal of Social Science & Management Studies

Scanned with CamScanner

Contents

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका	डॉ. शशिकेश जोशी	1-3
2	मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों में 2018 में विद्यमान रही विधायक महिलाएँ	डॉ. कमलेश्वरी जोशी चाँदनी जैन	4-6
3	भारत में बाल अपराध की स्थिति	डॉ. विश्वास चौहान मीना परवानी	7-10
4	भारत में विभिन्न समय में हुये लोक कल्याण	मधु अवस्थी ज्योति शर्मा	11-13
5	महेश्वर एवं ओंकारेश्वर नदियों पर नर्मदा नदी के विभिन्न तत्त्व	डॉ. पी.सी. झामनी श्याम सिन्हा	14-16
6	असंगठित क्षेत्र में न्यूनतम मजदूरी का समय–समय पर परिवर्तन	डॉ. मोहम्मद नकवी विपिन सोनी	17-18
7	म.प्र. राज्य में कृषि उपज भण्डारण व्यवस्था : एक अध्ययन	अनुराधा कौरव	19-22
8	शिल्पी श्री हरि श्रीवास्तव जी की साहित्यिक यात्रा	तनु दुबे डॉ. (श्रीमती) किरण शुक्ला मृगेन्द्र निगम	23-25
9	भारत संचार निगम लिमिटेड का विकास क्रम	डॉ. नुपूर निखिल देशकर अंकित पाण्डेय	26-28
10	दरभंगा प्रमंडल में कृषि विविधीकरण – एक अध्ययन	अनामिका कुमारी प्रो. हिमांशु शेखर	29-31
11	मुक्तिबोध की परम्परा के कवि मलय	वर्षा दुबे	32-33
12	कमलेश बख्शी के उपन्यासों में अस्मिता की तलाश	ममता सोलंकी	34-36
13	कबीर के तत्कालीन समाज की स्थिति	राम गोपाल	37-38
14	बालाघाट की पवारी समुदाय और उनका लोक जीवन	भारती शरणागत	39-40
15	संत परम्परा और आण्डाल : आलवार वैष्णव भक्त	आंचल यादव	41-43
16	पंचायतीराज में महिला सशक्तिकरण	सुमित्रा बेनल	44-45
17	बहुविषयक उपागम की आवश्यकता समावेशी शिक्षा के संदर्भ में	डॉ. शकीला खान	46-50
18	निःशक्त व्यक्तियों की सहायता हेतु पुनर्वास केन्द्रों की भूमिका	अपर्णा श्रीवास्तव	51-54
19	पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता	डॉ. ब्रम्हानंद त्रिपाठी विजय सिंह मार्को	55-57

Scanned with CamScanner

International Journal of Social Science & Management Studies (Peer Reviewed & Refereed Research Journal) I.J.S.S.M.S.
& Impact factor - 3.9 Research Journal
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 5, No. – 7 August 2019

बहुविषयक उपागम की आवश्यकता समावेशी शिक्षा के संदर्भ में

डॉ. शकीला खान
(अतिथि शिक्षक), शिक्षा शास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर

समावेशी शिक्षा सामाजिक समावेशी संस्कृति को विकसित करने में एक आदर्श है जो स्वायत्तता, आत्मनिर्णय और विकलांग लोगों के साथ बिना किसी भेदभाव के आगे बढाता है, समावेशन विकलांग और गैर–विकलांग बालकों में अन्तःक्रिया, सहयोग और सहपाठी अधिगम के माध्यम से सामाजिक कौशल के विकास को बढावा देता है। समावेशन आत्मसम्मान, स्वीकृति, समझ और मित्रता को बढाता है। समुदाय में सभी बालकों और युवाओं को शामिल किया जाता है जो कि स्वस्थ, अधिक संतुलित और सभी सदस्यों के लिए फायदेमंद होते हैं। तेजी से बढती जनसंख्या के कारण सार्वभौमिक पहुँच और समावेशन एक जटिल और चुनौतीपूर्ण मुद्दा है जिसके लिए बहुविषयक उपागम की आवश्यकता है। समावेशी शिक्षा की गुणवत्ता न केवल समावेशी नीतियों के कार्यान्वयन, धन और बुनियादी ढाँचे पर बल्कि कक्षा व्यवस्था पर भी निर्भर करती है। बालक को अपनी रूचि, क्षमता अनुसार और अधिक प्राप्त करने हेतु समावेशी शिक्षा का व्यवहार, सामाजिक शैक्षिक और ढांचागत बाधाओं को अध्यापक द्वारा समझना अत्यन्त आवश्यक है।

दिव्यांग बालकों की मदद करने के लिए अनेक शैक्षिक कार्यक्रम है वे मुख्य रूप से तीन क्षेत्रों में मदद करते है। सबसे पहले प्रशिक्षण कौशल को सीधे निर्देशन कौशल से प्राप्त करना, दूसरा आत्मनिरीक्षण को शिक्षण रणनीतियों के माध्यम से छात्रों को सिखाना, तीसरा सामाजिक कौशलों के विकास के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम। आज सार्वभौमिक पहुँच और समावेशन के लिए बहुविषयक उपागम की आवश्यकता है।

बहुविषयक उपागम (Multi-discipinary Approach)

Meaning :- बहुविषयक शब्द का प्रयोग रिकॉर्ड वर्षों में अंतःविषयक (Interdisciplinary) शब्द के स्थान पर होने लगा है।

1. अमेरिकन हेरीटेज शब्दकोश (2009) के अनुसार, "बहुविषयक उपागम एक बार में कई विषयों के प्रयोग से संबंधित है।"

2. अंग्रेजी कोलिन्स शब्दकोश के अनुसार, "बहुविषयक उपागम एक विषय में कई विषयों को शामिल कर एक अध्ययन के लिए सापेक्षता है।"

3. वेबस्टर शब्दकोश कॉलेज के अनुसार, "बहुविषयक उपागम को विशेषज्ञता के क्षेत्र में अधिगम की गई विशेष शाखाओं के संयोजन के रूप में परिभाषित किया गया है।"

बहुविषयक उपागम द्वारा सामान्य परिधियों से बाहर जाकर समस्या को विभिन्न आयामों के द्वारा परिभाषित कर सकते हैं तथा जटिल समस्याओं का नई समझ के आधार पर हल निकाल सकते हैं। बहुविषयक कार्य को कौशल केन्द्रित विशिष्टताओं से अक्सर क्रांतिकारी रूप में देखा जा सकता है, लेकिन यह साकल्यवाद प्रकृति द्वारा निर्देशित मौलिक अभिव्यक्ति है।

In Multidisiplinary Approach :-

1. कर्मचारियों को अपने ज्ञान व विशेषज्ञता को साझा करने व कौशल और नए उपागमों को सीखने के लिए तैयार रहना चाहिए।
2. कभी–कभी कई विशेषज्ञ सीधे तौर पर सलाह और सहायता प्रदान करते हैं।
3. कर्मचारियों को कौशलों के विस्तार और समावेशी समझ बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण देकर तथा उनकी संतुष्टि तथा आत्मविश्वास बढ़ाना।
4. कार्यप्रणाली और उम्मीदों में संभावित बदलाव करना जो कि वयस्कों के लिए महत्वपूर्ण उत्प्रेरक तथा चुनौती बन सकते हैं।

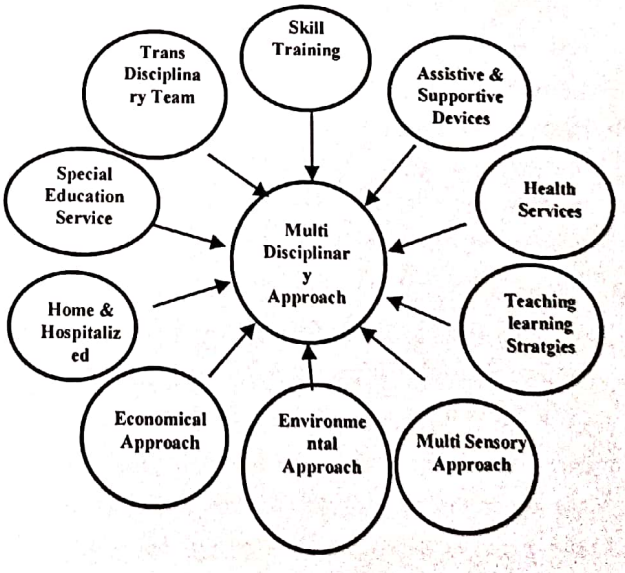

Scanned with CamScanner